☛ रौशन पाठक

अब तो आ जा रे मुसाफिर

अब तो आ जा रे मुसाफिर,
अब राधा की नैना भी हारी ।

रात ना सोई, याद में तेरी
क्या–क्या सोच मुस्काती थी ।
पलकें दोनो बंद किये,
खुद से ही बतियाती थी ।
भोर सुहानी जब से हुई है
खिली कली सी, मुस्काते
सज के दरवाजे चली आई ।
तब से ये कजरारी ऑख,
जोहती हैं, बस राह तुम्हारी ।
अब तो आ जा रे .....

सुबह सुहानी बीत गई,
और जलती दुपहर भी बीती
पर राधा के व्याकुल नैनो नें,
अब तक पलके ना झपकी ।
कितनें पग इन राहों से,
अब तक जानें गुजर गयें,
पर जिस पग को राधा चाहे,
जानें राहों में कहॉ ठहर गयें ।
दीपक राधा ने जो जलाया था,
तुम्हारे इंतजार में,
अब तो वो दीप भी हारी
अब तो आ जा रे .....

सुबह गई और दुपहर बीती,
सॉझ भी है आधी बॉकी ।
लौट रहें हैं शाम होते ही
अपनें घर को सारे पशु नर नारी ।
लौट चला दिनकर भी घर को,
बस लालिमा है थोड़ी बॉकी ।
टेक लगाये मत्था दरवाजे,
एक टक बिन झपके पलक
ढूँढती है एक झलक तुम्हारी ।
अब तो उत्सुकता भी हुइ आधी,
हुइ आधी उम्मीदें सारी ।
अब तो आ जा रे .....

दूर कहीं से काई आ जाये,
अंधेरे में कोई नजर तो आये ।
मन में बची ये कुछ उम्मीदें,
आखों में है बहते ऑसू,
लिप चुकी ऑखो की काजल,
सूख गई होठों की लाली,
शुध नहीं चुनर की कोई,
चेहरे पर घोर निराशा
सुबह से भूखी–प्यासी
गोरी की, हुई सूरत भी कारी ।
अब तो आ जा रे .....

चमकते तारे आसमान के,
आज जानें क्यों धुँधला से गये,
आधी रात अधजगी बीत चुकी,
अब आधी है बाकी ।
निन्द नहीं है आखों में,
सिमटी चादर, खुली चौड़ी आखें,
नैनों में कोई भाव नहीं,
बहता रक्त, कटी कलाई,
कह रही है यही कहानी,
ओह ! मौत हुई जीवन पर हावी।

दौड़ता अब तूँ आया रे मुसाफिर
जब राधा ने जीवन हारी ।